REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2018

काशीनाथ सिंह की कहानियाँ में प्रेम संबंध

प्रकाश कुमार
शोधकर्त्ता , स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग ,
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर.

प्रस्तावना :

कहानीकार काशीनाथ सिंह ने अपनी कहानियाँ के द्वारा हिन्दी भाषा के एक नया स्वरूप और एक नई जीवंतता और जिजीविषा प्रदान की है। काशीनाथ हिन्दी के उन थोड़े से कहानीकारों में एक है, जो सामाजिक यथार्थ के साथ–साथ विभित्र साहित्यिक विधाओं की बनावट बुनावट और निर्मिति–प्रक्रिया के सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्वों को भली–भॉति पहचानते है। काशीनाथ सिंह ने बड़ी मशक्कत के साथ बोलचाल की भाषा के विभिन्न रूपों को पहचानकर अपनी कथा–भाषा की सर्जना की है। लवड़ा, ढूँसना, बासी–तिवासी, सरपोटना, व्योना–चकत्ती, सबुनाना फीचना, अगोरना, आद्या तिहा कल्ला फूटना तेल चिपोरना, सबुर, लात मुक्का होला पाती चिबिल्ली धनखर, न्योता हंकारी बिल्ला अहरा भौरी बुड़वक जैसे शब्द उनकी कहानियों में बड़ी आसानी से मिल जायेंगे, पात्रों के संवाद का वह इस प्रकार नियोजित करते है कि उससे उनका पूरा परिवेश, व्यत्तित्व और संस्कार हमारे सामने उद्‌भासित हो उठते है। कौन ढगवा नगरियालटल हो में जितने तरह के पात्र है उनकी ही तरह के अन्दाज वाली भाषा है वाक्य विन्यास है। कुछ जायजा लीजिए– ''अरे बेशरम। बेहया। थूक कर चाटने वाले। कल तक मुहल्ले में घूम–घूमकर इन अंगरेज अंगरेजिनों को म्लेच्छ और जानवर कह रहे थे, कह रहे थे कि साले नहाते–धोत नहीं झाड़ा फिरते है तो कागज में पाछकर फेंक दते है। गोमांस खाते है राक्षस है।''

काशीनाथ सिंह अपनी कहानी आखिरी रात में बदलते हुए पति पत्नी के रिश्ते को बड़े दंग से चित्रित करते है। एक नये शादीशुदा घोड़े के जीवन में किस प्रकार आर्थिक मूल्य हावी हो जाते है।

पत्नी अपने मायके जाने वाली आखिरी रात में अपनी पति से कुछ वस्तुओं की मांग करती है जो उसका पति नहीं पूरा कर पाता है इसके कारण दोनों के सबंधों में बदलाव आ जाता है। जो पहले प्रेमपूर्ण एवं रोमांसयुक्त वैवाहिक संबंध था अब उसमें वे एकाकीपन एवं खालीपन महसूस करने लगा है। काशीनाथ सिंह लिखते है– ''आरम्भ टूट जाता है एक खामोशी व्याप्त होती है खामोशी जो कही बाहर नहीं है हमारे भीतर है। हम कड़ी खोजने लगते है पत्नी इतने दिन मेरे साथ रही है। मैने इनके लिए कुछ भी नहीं किया है। कर ही नहीं सका हूँ और जब आज जा रही है तब भी में उलझन अनुभव कर रहा हूँ।''[2]

इतना ही नहीं पत्नी की वस्तुस्थिति तो और भी उलझन से भरी हुई है। पति–पत्नी से खीझ कर कहता है– ''तुम खाक समझती हो मैं सहसा चीख उठता हूँ। मेरी तबीयत झल्ला जाती है साड़ी ब्लाउज, फ्राक, शर्ट..... .. इन सबके माने क्या होता है जानती हो? पत्नी सिटपिटाकर बैठी रहती है। वे धबरा गई है। सम्भव है चीखने से चौक भी गई है।''[3] व्यक्ति के जीवन में किस प्रकार की कृत्रिमता एवं मानवीय रिश्तों में बदलाव आ रहा है। कुछ यही बयां करती हुई कहानी है यह कशीनाथ की। इस कहानी में कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण पारिवारिक जरूरतों को पूरा न कर पाने में असमर्थ एवं बेबस व्यक्ति का यथार्थ वर्णन मिलता हैं– रिश्तों की कश्मकश के साथ।

काशीनाथ सिंह की कहानी 'सुख' के भोला बाबू प्रकृति के सौन्दर्भ का सुख भार एक लम्बे अरसे के बाद जीवन में पहली बार उठाते हैं। सुख प्रकृति से विच्छिन्न होते जा रहे मनुष्य की कहानी है। मनुष्य से मनुष्य के पिता से पुत्र के, पत्नी से पति के, माँ से बेटे के सम्बन्ध के टूटने या बिखरने की कहानियाँ तो लिखने वाले और भी थे लेकिन सुख की अपने ही परिवार और समाज में अकेले पड़ते जा रहे मनुष्य की कहानी। कहने का

मतलब है कि इस अन्धी भाग दौड़ में व्यक्ति अपने बारे में भी सोचने के लिए समय नहीं निकाल पाता है। वह उस सुख से वचिव रह जाता है जिस सुख की अनुभूति भोला बाबू को होती है। ''फिर उन्होंने चारदीबारी के बाहर आँखे घुमाई इधर–उधर दूर दीखने वाली हरिजन बस्तियों पर देखा झोपड़ियाँ लम्बी हो गई हैं। सुकाल की मड़ई लम्बी होकर मन्दिर छू रही है। मन्दिर के पास एक गाय खड़ी हे और पूँछ झटकार रही है। उन्होने गाय को गौर से देखा वह लाल है या सफेद ही है? वे तय नहीं कर पाए। वाह क्या मजाक है? वे मुस्करा उठे।''[4] इतना ही नहीं इन सबके पीछे उस बिन्दु पर ध्यान दिया जाए जिसके कारण भोला बाबू मुस्करा रहे थे उन्होंने सहसा देखा ''सहसा भोला बाबू का ध्यान सूरज पर गया। सूरज का गोला छोटा–बड़ा हो रहा था। काँप रहा था।''[5] इस सुख को भोला बाबू अपनी पत्नी बच्चो ऊँट वाले जिलेदार साहब इत्यादि को बताते है लेकिन उनके सुख को कोई समझ नहीं पाया। अन्त में भोला बाबू को अपनी पत्नी और बच्चों से काफी निराशा होती है। आपसी रिश्तो में किस प्रकार का बदलाव आ रहा है। एक व्यक्ति के सुख को दूसरा व्यक्ति समझने की कोशिश नहीं करना चाहता है।

काशीनाथ सिंह अपनी एक कहानी कस्बा जंगल और साहब की पत्नी में भी पति–पत्नी के रिश्तों में आये बदलाव पर दृष्टि केन्द्रित करते है। साहब की पत्नी मिसेज गोठी अपने संबंधो को लेकर कस्बे फैली चर्चा से काफी परेशान है। एक तरफ मिसेज गोठी अपनी तारिफ करके अपनी हैसियत बढ़ाना चाहती है तो दूसरी तरफ कस्बे में उनके बारे में अफवाहे व्याप्त हैं। वे उससे परेशान हैं। मिसेज गोठी काफभ अन्तर्द्वन्द में रहती है जिसका प्रभाव उनके विचार व्यहार पर पड़ता नजर आता है मिसेज गोठी कस्बे वालो के बारे में भी उच्च विचार नहीं रखती है। बल्कि उनसे फायदा उठाने से भी नहीं चूकती मिसेज गोठी अपने पति के बारे में क्या सोचती है? ''क्यों सो गए? मिसेज गोठी ने धीमी आवाज में बड़े स्नेह से पूछा।''[6] स्पष्ट है कि मिसेज गोठी पति से प्यार करती है। लेकिन उन्हें इस बात का विश्वास नहीं है कि उनका पति भी उनसे प्यार करता है। इस प्रकार मिसेज गोठी सदैव अन्तर्द्वद्व में फँसी रहती है।

काशीनाथ सिंह की कहानियों में सामाजिक मुद्दों से संदर्भित अनोखे तरह के वर्णन मिलते है। उनकी एक कहानी सिद्दीकी की सनक है। इसमें सिद्दीकी घटनाओं के पीछे के सच को जानना चाहते है। प्रश्न है कि क्यों जानना चाहते है उद्देश्य क्या है? सिछीकी का उत्तर है– सच का पता लगाने के अलाव और कोई उद्देश्य नहीं है। सजा किसी को मिले अपराधी कोई हो, उसके फलितार्थ जो भी हो, उन्हें कोई महलब नही। वह देखता है– जाँच पड़ताल करने वाले कानून की वकालत करने वाले तथा न्यायाछीश अपनी अपनी जातियों के अनुरूप काम करते है। अपना अपना सच बनाते है। काशीनाथ सिंह लिखते है– ''सिद्दीकी को न तो इन सारे पचड़ो और पेचों से मतलब था और न ही इससे कि वाकये की वजह क्या है? पुरानी रंजिश (जैसा कि थाने की रभर बताती है) या मुनाफेवाला वह खास ठेका जिस पर दोनो ठेकेदारी करने वाले छात्रनेता दावा कर रहे है? (जैसा कि नगर के लोग बताते है)''[7] इतना ही नहीं वे आगे लिखते है– ''सिद्दीकी को उससे मतलब नहीं था कि रपट में असल हत्यारे के नाम को किस इरादे से छोड़ रखा गया था।''[8] सिद्दीकी को सहयोग कहीं से नहीं मिलेगा। मुद्दा जाति–निरपेक्ष सच की तलाश का नहीं है। अतः वे स्वयं पीठ में सच तुम कहाँ हो, चिपका कर निकल पड़े और नहीं लौटे। पत्नी, पति को खोज रही है और बेटा अब्बा की प्रतीक्षा में है।समाज में किस प्रकार मानवीय मूल्य बदल गए है कि एक व्यक्ति को दूसरा व्यक्ति पहचानने से इंकार कर रहा है। इने बिन्दओं पर काशीनाथ सिंह ने अपनी कहानियाँ में विचार किया है।

काशीनाथ सिंह ने अपनी कई अन्य कहानियों में मानवीय रिश्तों के ऊपर लेखनी चलायी है। उन्होंने देखा कि व्यक्ति थोड़े से सुख के चक्कर में फँस कर किस प्रकार दुखों को मोल लेता है। उन्होंने अपनी काहनियों–मौज मस्ती के दिन वे तीन घर 'पहला प्यार' 'सन्तरा' और अपना रास्ता लो बाबा में भी समाजिक रिश्तों के अन्तर्द्वन्द्व को उभारा है। काशीनाथ सिंह ने इस बात को बड़े सजीव ढंग से चित्रित किया है कि व्यक्ति के मन में किस प्रकार की कृत्रिमता घर करती रही है। इसी कृत्रिमता के कारण मानवीय संबंधों में बदलाव दिखाई देने लगा है। काशीनाथ ने अपनी कहानी मौजमस्ती के दिन एक चमरासी सुखराम को केन्द्र में रखकर कर लिखि है। इसमें सुखराम के दफ्तर का अधिकारी उसके ऊपर हावी है। सुखराम के अधिकारी को जितनी चिन्ता अपनी कुतिया की है उतनी सुखमय की नहीं है। जबकि सुखराम की चिन्ता के केन्द्र में उसका परिवार है। ''उन्हें धीरे–धीरे निराशा घेरने लगी अब तो खेलने–खाने के दिन आ रहे थे। जिन्दगी शुरू ही की थी। उम्र ही क्या थी उनकी ? यह बस सात महीने कम पैतीस साल। जो बीत गया, वह चाहे कितना बुरा रहा

हो आज याद करो तो अच्छा ही लगता है। वे ही लोग जिन्होंने उन्हें गाँव भर में बसने नहीं दिया, एक न एक खुरच करते रहे जब भी याद आते है, उनसे मिलने के लिए देखने के लिए, बोलने बतियाने के लिए मन तड़प उठता है उन्होंने अपनी जान से किसी का कुछ नहीं बिगड़ा, फिर भी ऐसा हो गया।''[9] इतना ही नहीं बल्कि उनके जीवन में विपत्ति ओर बढ़ जाती है। अधिकारी अहंकार में अंधा है– वह चपरासी की पीड़ा सुनना नहीं चाहता और चपरासली कुत्ते के काटने के डर और अधिकारी के डर से एक साथ परेशान और असहज है। कुतिया की मौत हो गई और सुखराम निर्लाम्बत हो गए। सुखराम के जीवन की यही त्रासदी है जिसके कारण वे अन्तर्दृन्दृ मं खोजते रहते है। ''लेकिन धीरे–धीरे अपने जीवित रह जाने के खितरो और चिन्ताओं से वे बेचैन होने लगे। उन्हें वह दुर्लभ अवसर हाथ से खिसकता हुआ नजर आने लगा तो बिना किसी मशक्कत के अनचाहे ही हासिल हो गया था।''[10]

जाहिर है कि व्यक्ति की संवेदना खत्म होती जा रही है। अधिकारी वर्ग अपनी शान–शौकत के चक्कर में अपने अधीनस्थ कर्मचारियों का शोषण करते है तथा अन्त में उन्हें हलाल भी करते है। उसकी परिणति चपरासी सुरवराम जैसी होती है।

'वे तीन घर' में मदन–ब्रह्माण और विपतराम चमारा स्कूल के मित्र है। वैचारिक मोहब्बत में बंधे है। विपतराम नेता हुआ प्रसिद्धि मिली। वह चुनाव तो हारा पर हैसियत बढ़ गई। बिरादरी के मोहल्ले से अलग तथा कथित बड़े लोगें के बीच घर बना लिया बच्चों का अंग्रेजी स्कूल में दाखिला हो गया। बिना नौकरी के नेतागीरी की कमाइ है यह मदन जिद की हद तक उसूलों में टिका रहा तो ने घर के लोगों में विश्वास जमा सका और न सरकार में उसकी इज्जत बनी उसे अपने रास्ते के बारे मं आशंकाएँ होने लगीं। '' सहसा वे चौककर खड़े हो गए कहीं वे विपत के रास्तें ही तो नहीं सोच रहे है? उन्होंने जेब से रूमाल निकाला और उसे आँखों पर हौले–हौले ऐसे थपथपाया जैसे पानी का छीटा दे रहे हों।''[11] 'पहला प्यार' कहानी में शशांक शेखर पाण्डेय उर्फ फत्ते गुरू का बड़ा भाई भोला शंकर पाण्डेय कस्बे का डाकिया है। किराए के घर में दोनो भाई रहते हैं। खिड़की से फत्ते गुरू को चिपरी पाथने वाली लड़की दिखती है और उसकी ओर आर्काषित होते है।। फत्तेगुरू पढ़ने में कमजोर है, अंग्रेजी के अक्षर याद नहीं आने का शब्द है। फत्ते पहले लोभे (लव) भूलता था पर अब यह बार बार याद आनेवाला शब्द है। ''फत्ते गुरू चिपरियाँ तक चूम आते और तरह–तरह से अपने प्रेम का इजहार करते।''[12] बड़े भाई नजरे चुराकर प्रेम की पींग बढ़ाते और तब जाति पांति भूल जाती। पहले और कच्चे प्यार की उमंगे है इस कहानी में।

इसी तरह सन्तरा कहानी में सीताराम ईमानदार आदमी है। राह चलते एक ने संतरा खिला दिया। उसकी रस गंध मुँह से आने लगी। जिसने संतरा खिलाया था, उसने स्वयं संतरे का रस दिया। गिलास गिर जाने से सीताराम के कपड़ों में छींटे पड़ गए। अब उनके कपड़ों से भी संतरे की गन्ध आने लगी। ''घर आये तो बच्चों और पत्नी को संदेश हुआ कि घर के लोगों की चोरी से सन्तरा खाते है।''[13] उन ईमानदारी में दरार पैदा हो चुका है। इसीलिए उनके सफाई देने से भी कोई लाभ नहीं होता बेटियों को बहलाते–बहलाते सीताराम निद्रामग्न हो जाते है। दरअसल ईमानदार आदमी की त्रासदी को रूपायित करती है यह कहानी 'अपना रास्ता लो बाबा' कहानी में देवनाथ है, गाँव से आये बिरादरी के बाबा बेंचू हैं, पत्नी आशा और बच्चे है। दो मन्तव्यों में घिरी है कहानी। देवनाथ शहर में हैं। नहीं चाहते कि गाँव से कोई आये उसकी सेवा करनी पड़े और उनकी आजादी में दखल हो, और बाबा है जो भरोसे से आये हैं – ''कैंसर का इलाज करवाने बच्चों के लिए घड़े में भर कर गन्ने का रस लाये हैं। खेत से मटर निकलवा कर और होरह भी।''[14] ऊपनत्व के कारण बाबा ने घर के भीतर अपनी ही पद्धति से पैरों को धोया, कुल्ला किया बिस्तर में लेट गये। देवनाथ की निगाह में घर गन्दा हो गया गन्ने के रस की बूदें गिरी तो चीटियों के आने की आशंका हुई। ''पत्नी ने देवनाथ को धमकी दे दी कि वे उनके लिए रोज खाना नहीं बनायेंगी''।[15] देवनाथ ने चालाकी पूर्वक जल्दी जल्दी उन्हें डॉक्टर को दिखा दिया। डॉक्टर द्वारा चिन्हित कैंसर रोग की बात वे छिपा गए और सस्ती गोलियाँ खरीद कर दे दी। बाबा को निरोग कहकर उन्होंने गांव लोटा दिया। देवनाथ का काईयाँपन और बाबा का भोलापन कहानी का मूल है। उसमें ग्रामीण की सहज सरलता और शहरी निम्मध्यमवर्ग की छोटी–छोटी बातों में चालाकी ओर काइयॉपन को बड़ी सरलता से व्यंजित करने में सफल हुए है काशीनाथ।

जीवन में पति–पत्नी के बीच मन–मुटाव होता रहता है। काशीनाथ सिंह ने अपनी कहानी कविता की नई तारीख में दिखाया है– ''सुनो भड़को मत। दूसरे के सुख से अपने को दुखी मत करो वरना सारी जिन्दगी

रोते गुजरेगी मेरी जान। हमारे सोचने की चीज यह नहीं है कि किसका लड़का विलायत पढ़ रहा है बल्कि दूसरी है। देखो... हम घर पर खुश नहीं थे। नहीं थे न। एक ही जगह एक स्पष्ट ही जैसे दिन और रातें, रोज–रोज लड़ाई–झगड़ा असंतोष और ऊब और डॉट–डपटा तो हम लोगों ने सोचा कि कुछ दिनों के लिए इस जिन्दगी को बदले नई करें– थोड़ा हंसे–गाएँ।[16]

आज के समय में समाज में जाति के नाम पर राजनीति, धर्म के नाम पर राजनीति, क्षेत्र के नाम पर राजनीति और भाषा के नाम पर राजनीति करके समाज को विभाजित करने की गहरी साजिश रची जा रही है। भाई–भतीजावाद, स्वार्थ एवं तरक्की के चलते मानवीय रिश्तों में खटास पैदा होती जा रही है। आज आर्थिक होड़ में व्यक्ति अपने निजी संबंधों पर भी ध्यान नहीं दे पा रहा है। पति–पत्नी के संबंधों में भी एक अलग किस्म की कृत्रिमता आती जा रही है। पिता–पुत्र, भाई–भाई, भाई–बहन एवं माँ और पुत्र के संबंधों में बिखराव दिखाई देना शुरू हो गया है। काशीनाथ सिंह ने इन संबंधों की जटिलता बड़ी जिन्दादिली से उसके मार्मिक रूप को अपनी कहानियाँ में उजागर किया है।

काशीनाथ सिंह की कहानियाँ में प्रेम–संबंध एवं ग्रामीण जीवन का जो चित्रण मिलता है उसकी संवेदना को बड़े सजीव ढंग से व्यक्त किया है। किस प्रकार का समाज आने वाले समय में होगा, उसकी आहट काशीनाथ सिंह के कहानियाँ के मार्फत हमें मिल जाती है।

संदर्भ :

1. सम्बोधन, साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका, पृ0–188 अक्टूबर–2012 जनवरी–2013
2. कहनी उपखान, काशीनाथ सिंह, पृ0–23
3. वही पृ0–25
4. कहनी उपखान, काशीनाथ सिंह पृ0–13
5. वही
6. कहनी उपखान, काशीनाथ सिंह पृ0–48
7. सदी का सबसे बड़ा आदमी, काशीनाथ हिसं, पृ0–46
8. वही
9. सदी का सबसे बड़ा आदमी, काशीनाथ सिंह, पृ0–57 राजकमल प्रकामप 1–बी नेताजी सुमापमार्ग नई दिल्ली 110000, 1986
10. कहनी उपखान, काशीनाथ सिंह, पृ0–257
11. सदी का सबसे बड़ा आदमी, काशीनाथ सिंह, पृ0–81
12. प्रतिनिधि कहानियाँ, काशीनाथ सिंह, पृ0–11
13. सदी का सबसे बड़ा आदमी, काशीनाथ सिंह, पृ0–100
14. मरी प्रिय कहानियाँ, काशीनाथ सिंह, पृ0–61
15. वही पृ0–62
16. कहनी उपखान, काशीनाथ सिंह, पृ0 – 376

प्रकाश कुमार
शोधकर्त्ता , स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग , तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर.

LBP PUBLICATION